International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2019; 1(1): 92-94
Received: 22-06-2019
Accepted: 25-07-2019

Abhinav Anand
Research Scholar,
Department of Geography,
Magadh University, Bodh Gaya, Bihar, India

Corresponding Author:
Abhinav Anand
Research Scholar,
Department of Geography,
Magadh University, Bodh Gaya, Bihar, India

जनसंख्या नियंत्रण में महिला सशक्तिकरण का योगदान

Abhinav Anand

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन जनसंख्या नियंत्रण में महिला सशक्तिकरण के प्रयासों की व्याख्या करता है। अध्ययन में प्रस्तुत आंकडो का विश्लेषण इस बात की पुष्टि करता है कि जनसंख्या नियंत्रण के केंद्र में महिलाओं की सशक्त एवं साक्षर स्थिति ही इस वैश्विक समस्या की वृद्धिदर को कम कर सकने में सक्षम हो सकती है। यह अध्ययन न केवल महिला सशक्तिकरण के विषय में समझ को विकसित करता है कि बल्कि पिछले कुछ दशको में महिला सशक्तिकरण के कारण आये जनसंख्या परिवर्तनों का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कूटशब्द: वृद्धिशील जनसंख्या, महिला सशक्तिकरण, जनसंख्या नियंत्रण, प्रजनन दर, मृत्युदर, जन्मदर, परिवार नियोजन

प्रस्तावना
जनसंख्या नियंत्रण न केवल भारत ही बल्कि विश्व बिरादरी हेतु भी एक केंद्रीय मुद्दा रहा है। लगातार तीव्र वृद्धिदर से बढ़ रही वैश्विक जनसंख्या वैश्विक संसाधनों के अति दोहन से जूझ रही है। आज विश्व जनसंख्या विस्फोट के गंभीर परिणामों को भली भाँति देख रहा है। भारत भी इस चुनौती से अछूता नही रहा है। भारत में निवास करने वाली आबादी की कुल संख्या विश्व में चीन के पश्चात दूसरे स्थान पर आती है। किसी भी सरकार हेतु अपने राज्य अथवा राष्ट्र में निवास करने वाले नागरिको की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण कर पाना उस समय अत्यन्त कठिन हो जाता है जिस समय उस राष्ट्र अथवा राज्य में उपस्थित संसाधनों पर बोझ बढ़ने लग जाता है। किसी भी जनसेवा अथवा सरकारी लाभ को पूर्ण जनसंख्या तक पहुँचाना अत्यन्त कठिन हो जाता है। अत ऐसे में किसी भी राष्ट्र के समक्ष जनसंख्या नियंत्रण ही एकमात्र उपाय है। हालांकि भारत में इसकी शुरुआत वर्ष 1915 से नव जागरण के रूप में देखी जा सकती है। इस दिशा में प्रथम वास्तविक कदम 1917 में भारतीय महिला संघ की स्थापना के रूप में प्रारंभ होता है। जिसका उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा एवं सामाजिक स्तर पर उनकी भागीदारी को चिंहित करना था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात परिवार नियोजन की शुरुआत न केवल महिला सशक्तिकरण की वकालत करता है बल्कि राष्ट्रीय हित में जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। परिवार नियोजन वास्तव में छोटे परिवारों में बच्चों के जन्म अंतराल में अंतर करने से संबंधित है। जनसंख्या नियंत्रण का प्रमुख केंद्र महिलाओं को माना गया है यानि यदि महिलाओं को जनसंख्या के दुष्परिणामों एवं महिला अधिकारों के विषय में पूर्ण रूपेण जागरूक किया जा सका तो ही इस समस्या से आसानी से निपटा जा सकता है। अत इस अध्ययन में इसी बात को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या नियंत्रण में महिला सशक्तिकरण के योगदान को समझाने का प्रयास किया गया है।

डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में सही-सही जानना है तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो। कोई समाज कितना मजबूत हो सकता है, इसका अंदाजा इस बात से इसलिए लगाया जा सकता है क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी समाज की आधी आबादी हैं। बिना इन्हें साथ लिए कोई भी समाज अपनी संपूर्णता में बेहतर नहीं कर सकता है।

अध्ययन उद्देश्य

अनियंत्रित रूप से वृद्धिशील जनसंख्या के नियंत्रण में महिला सशक्तिकरण के औचित्य को समझना।

अध्ययन विधि

यह अध्ययन मुख्यतया प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकडो पर आधारित है। अध्ययन उद्देश्य की पूर्ण प्राप्ति हेतु आंकडो के विश्लेषण की विधि को अपनाया गया है। प्राथमिक आंकडो के रूप में भारत की जन गणना रिपोर्ट 1991,2001 एवं 2011 में जारी आंकड़े तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में पूर्व में किये गए संबंधित शोध कार्यों एवं चर्चित पुस्तकों के ज्ञान को आधार बनाया गया है।

आंकडो का संग्रहण

तालिका 1: दशकीय वृद्धि दर एवं औसत वार्षिक दर में गिरावट

जन गणना वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धिदर (% में)	औसत वार्षिक वृद्धि दर (% में)
1991	84.64 करोड़	23.87	2.16
2001	102.87 करोड़	21.54	1.97
2011	121.02 करोड़	17.64	1.64

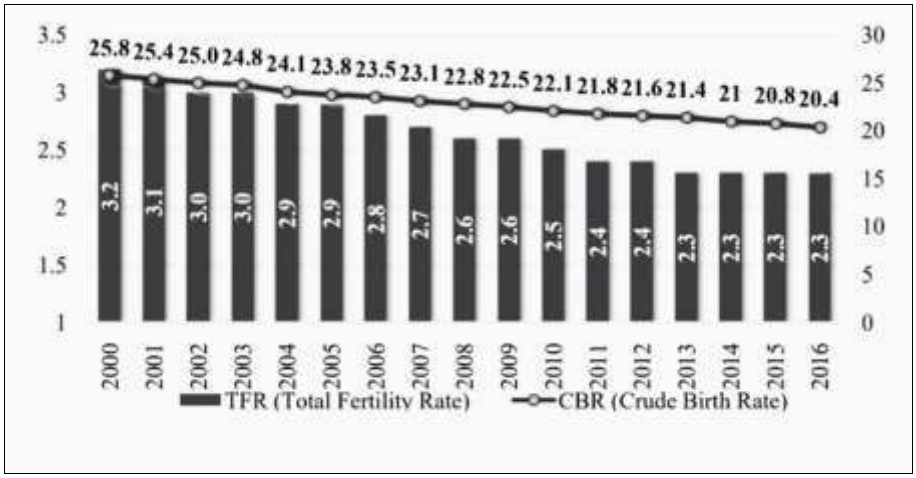

ग्राफ1: प्रजनन दर एवं जन्म दर में गिरावट

आंकडों का विश्लेषण

आंकडो का विश्लेषण ही इस अध्ययन का प्रमुख ध्येय है ताकि अध्ययन उद्देश्यों की स्पष्टता से जाँच की जा सके। तालिका संख्या 1 में संग्रहित किये गये आंकडो पिछले तीन दशको के जनसंख्या संबंधी जनसांख्यिकी, दशकीय वृद्धि दर एवं औसत वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाते हैं। इन आंकडो का प्रमुख आधार जनसंख्या रिपोर्ट वर्ष 1991, वर्ष 2001 एवं वर्ष 2011 के जनसांख्यिकी आंकड़े हैं। वर्ष 1991 में जारी जन गणना रिपोर्ट के अनुसार भारत की कुल स्त्री पुरुष आबादी 84.64 करोड़ थी जो वर्ष 2001 में 102.87 करोड़ हुई तथा वर्ष 2011 आते आते यह जनसंख्या बढ़कर 121.02 करोड़ हो गयी। इन तीन दशकों में यदि दशकीय वृद्धिदर को देखा जाए तो स्पष्ट होगा कि प्रत्येक दशक में इस वृद्धि दर में गिरावट दर्ज की जाने लगी है। वर्ष 1981 से 1991 के दौरान जनसंख्या की वृद्धिदर 23.87% एवं औसत वार्षिक वृद्धिदर 2.16% दर्ज की गयी। इसी प्रकार 1991 से 2001 के दशको के मध्य यह जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट देखी गयी एवं वार्षिक वृद्धि दर 2.16% से घट कर 1.97% पर पहुँच गयी थी। जो की वर्ष 2011 आते आते 1.97% से घटकर 1.64% ही रह गयी है। वार्षिक वृद्धि दर एवं दशकीय वृद्धि दर में आयी इस गिरावट न जनसंख्या के ग्राफ में नरमी के संकेत देने शुरू कर दिये हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण महिला सशक्तिकरण की दिशा में किये गए भरसक प्रयासों को आधार माना जा सकता है। भारत में महिला सशक्तिकरण की शुरुआत को एक नये अध्याय के रूप में देखा गया। जिसका स्पष्ट प्रभाव पिछले कुछ दशकों के दौरान कुल प्रजनन दर एवं जन्म दर में दर्ज की जाने वाली गिरावट के रूप में देखा जा

सकता है। इस गिरावट को जनसंख्या नियंत्रण में एक उल्लेखनीय कदम के रूप में देखा गया है। भारत लंबे समय से जनसंख्या नियंत्रण पर काम कर रहा है। वास्तव में, भारत राष्ट्रीय स्तर पर परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू करने वाला पहला देश था और अब हम जो उत्साहजनक परिणाम देख रहे हैं, वे केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा एक साथ किए गए निरंतर, ठोस प्रयासों के कारण हैं।

यहाँ ग्राफ संख्या 1 में दर्शाये गए आंकड़े अखिल भारतीय स्तर पर कुल प्रजनन दर (टीएफआर: प्रति महिला बच्चों की औसत संख्या) एवं जन्म दर के संबंध में गिरावट की प्रवृत्ति को दर्शाता है। कुल प्रजनन दर (टीएफआर) से तात्पर्य एक महिला के जीवनकाल में पैदा होने वाले या पैदा होने की संभावना वाले बच्चों/बच्चियों की कुल संख्या की औसत दर से है।

1. कुल प्रजनन दर एवं जन्म दर में गिरावट की प्रवृत्ति

पिछले कुछ दशकों के दौरान भारत में निरंतर रूप से क्रियान्वित परिवार नियोजन कार्यक्रम के कारण , देश की कुल प्रजनन दर वर्ष 2000 में 3.2 से घटकर वर्ष 2001 में 3.1 एवं वर्ष 2011 आते आते यह प्रजनन दर 2.3 फीसदी दर्ज की गयी। वर्ष, 1950 से तुलना की जाए तो यह दर 6 फीसदी से भी अधिक थी। कुल प्रजनन दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक गिरावट के साथ घट रही है।

अशोधित जन्म दर से अभिप्राय एक वर्ष में प्रति हज़ार व्यक्तियों पर जीवित बच्चों के जन्म की लेने की कुल संख्या से होता है। भारत में अशोधित जन्म दर के आंकड़ों में भी प्रजनन दर के समान ही गिरावट की प्रवृति स्पष्ट देखी जा सकती है। वर्ष 1950 के दौरान यह दर जहाँ 40.8% थी जो कि वर्ष 2000 में 25.8% दर्ज की गयी एवं वर्ष 2016 तक इसकी कुल दर घटकर मात्र 20.4% ही रह गयी है।

2. कुल प्रजनन दर (TFR- Total Fertility Rate) गिरावट के कारण

कुल प्रजनन दर में दर्ज की जाने की ऐतिहासिक गिरावट के केंद्र में महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में किये गए कार्यों का अहम योगदान रहा है। महिलाओं के सशक्तिकरण के उद्देश्य से परिवार नियोजन, शादी की सही उम्र का सत्यापन, गर्भ निरोधकों का प्रयोग एवं उनकी समझ, बच्चों के बीच अंतराल, गर्भावस्था के दौरान एवं पश्चात सही पोषण का चुनाव आदि कारकों के सुव्यवस्थित क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप ही कुल प्रजनन दर में कमी आने लगी है जो कि अनियंत्रित होती जनसंख्या की दिशा में वृद्धिदर में कमी के संकेत देती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में आंकडो के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि भारत में विगत दशकों के दौरान महिलाओं के कल्याण की दिशा में किये गए अथक प्रयासों एवं उनके सशक्तिकरण की दिशा में निर्मित नीतियो एवं कार्यक्रमों के उद्देश्यों का ही नतीजा है कि भारत में कुल प्रजनन दर एवं अशोधित जन्म दर में लगातार गिरावट की प्रवृति देखी जा सकती है। इसे जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में एक प्रभावी एवं ठोस कदम के रूप में देखा जा सकता है। इन कार्यक्रमों के कारण ही महिलाओं की स्थिति भी सामाजिक स्तर पर सुदृढ़ होती जा रही है। प्रत्येक स्तर अथवा क्षेत्र में महिलाओं को बढ़ती हुई भागीदारी इस बात को बल देती है कि यदि महिलाओं को उनके सभी अधिकारों से पूर्ण कर दिया जायेगा तो ही एक संतुलित राष्ट्रीय परिदृश्य का निर्माण हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1. National policy for the empowerment of women. Ministry of Women and Child development; c2001.
2. प्रो. शोभा सिंह, डॉ. अनुजा तिवारी, ग्रामीण विकास समीक्षा, महिला सशक्तिकरण विशेषांक, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान; c2016
3. Phan LY. Women's empowerment and fertility changes, International Journal of Sociology of the Family, 2013, 39(1).
4. Rouf Ahmad Bhat. Role of Education in the Empowement of Women in India, Journal of Education and Practice, 2015, 6(10).
5. Ly Dieu Phan. Women’s empowerment and fertility preferences in southeast Asia. A submitted thesis to The university of Sydney; c2016.